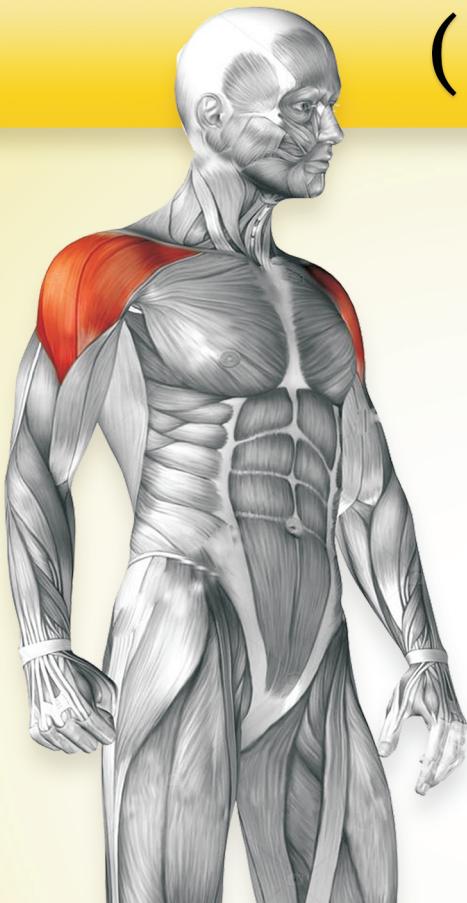


प्राकृतिक रोग-प्रतिरोधक शक्ति (इम्यूनिटी) बूस्टर



**COLLOIDAL
SILVER**

अर्थात्

शुद्ध चांदी
का पानी

Colloidal Silver

चाँदी का पानी



उनके लिए जो स्वयं से और अपनों से प्रेम करते हैं, उन्हें स्वस्थ निरोग और सुरक्षित रखना चाहते हैं।

आज हम जिस माहौल में जी रहे हैं, वह हमारे शरीर व सेहत के लिए कर्तव्य उचित नहीं है:- जहां देखिये वहाँ, प्रदूषण ही प्रदूषण। हम जिस हवा में सांस ले रहे हैं उसमें जहर भरा हुआ है जो भोजन हम ग्रहण कर रहे हैं उसमें पौधिकता को छोड़कर बाकी सब कुछ है। जिन घरों में हम रह रहे हैं, कहने को तो वे सर्वसाधन संपन्न हैं, पर उनमें सूरज की किरणों से हमारा सामना दिन में एक-दो बार भी हो जाये तो गनीमत है। कैरियर की चिंता, फैमिली के प्यूचर को लेकर तनाव, शरीर की अनदेखी कर एक ही समय में कई- कई कार्यों को अंजाम देना, देर रात तक जागना आदि... का हमारे शरीर पर कितना बुरा प्रभाव पड़ रहा है, हमारी रोग-प्रतिरोधक शक्ति (इयुनिटी पावर) दिन-प्रतिदिन क्षीण और कमज़ोर हो रही है, इसे जानते हुए भी हम अनजान बने हुए हैं। जले पर नमक तो ये कि इस सबके बाद भी हम उम्मीद करते हैं कि ये शरीर किसी “फार्मूला बन कार” की तरह ताउप्रेर्फर्मा मार कर दौड़ता रहे।

ऊपर से चीन की धूर्तता भरी मक्कारी के कारण आज पूरा विश्व इस नये “कोरोना वायरस” रूपी महामारी से त्राहि-त्राहि कर रहा है, अर्थव्यवस्था चौपट हो गयी है, प्राण बचाने का संकट पैदा हो गया है, कोई दवा बनी नहीं है, वायरस की कोई दवा बन पायेगी, कोई भरोसा नहीं है, पहले आये वायरस डेंगू, चिकन गुनिया आदि की कोई दवा वैक्सीन आजतक नहीं बन सकी, डॉक्टर और वैज्ञानिक अँधेरे में हाथ पैर चला रहे हैं, टीबी, मलेरिआ, एड्स, कैंसर और ना जाने कौन-कौन से रोगों की दवाओं का लोगों पर परीक्षण करके मौत के मुँह में धकेला जा रहा है, लोग असहाय और लाचार हैं, प्राइवेट अस्पतालों में लाखों की बसूली की जा रही है जबकि अभी तक इसकी कोई दवा बनी ही नहीं तो इलाज किस चीज का ? अपना और अपने परिजनों, परिचितों, मित्रों और रिश्तेदारों का इस वायरस और भविष्य में विकसित देशों की मक्कारी से आने वाले नए वायरसों से केवल बचाव ही इस संकट और आने वाले नए संकटों से सुरक्षित रहने का एकमात्र उपाय है, अतः हमें पश्चिमी सभ्यता और आधुनिकता का नकली चोला उतारकर अपने पूर्वजों की उस गौरवमयी धरोहर की ओर लौटना ही होगा, जिसमें हमारे पूर्वज कम संसाधन और कम सुविधाओं के बावजूद सदैव हृष्ट-पुष्ट और बलशाली बने रहते थे।

लक्षण और संकेत

रोग-प्रतिरोधक शक्ति की कमी होने पर शरीर में वायरस, बैक्टीरिया, फंगल, और पैरासाइट्स (सूक्ष्म परजीवी, राउंडवर्म...) की मौजूदगी का पता निम्नलिखित लक्षणों के

कोलाइडल सिल्वर का हिन्दी में मतलब चांदी का पानी होता है।

आधार पर किया जा सकता है:-

- बार-बार वैक्टीरियल / वायरल इन्फेक्शन का शिकार होना
- अच्छा खाना-पीना भी शरीर को न लगना
- अनीमिया या आयरन की कमी, पेट में जलन
- अल्पसर (क्यूटेनियस), एंजिमा, दाद-खाज, रैशेस, त्वचा में लाली, सूजन आदि
- गैस, पेट फूलना, कब्जियत, डायरिया जैसी पाचन सम्बन्धी गड़बड़ियां, जो हमेशा बनी रहती हैं
- भरपेट खाने के बाद भी भूख बनी रहना अथवा भूख कम लगना और चेहरा पीला पड़ना
- धड़कनें तेज होने, छाती और नाभि के पास दर्द होना
- कान, नाक, एनस, पेनिस में खुजलाहट
- जोड़ों और पेशियों में जलन के कारण दर्द, जो कि ऑर्थराइटिस के दर्द सा जान पड़ता है
- हमेशा थकान, कमजोरी और आलस्य महसूस करना
- पीठ, कंधों, और जाँधों में पीड़ा
- घबराहट और बेचैनी, रात में कई बार नींद का उचटना
- पुरुषों में सेक्स संबंधी गड़बड़ियां, स्त्रियों में सेक्स व माहवारी की समस्या

इम्यूनिटी पावर (रोग-प्रतिरोधक शक्ति) भारतीयों की धरोहर है:- पूरी दुनियां में सूर्य की प्रचुरता, मसाले, जड़ी-बूटियाँ और सोने चांदी के उपयोग के कारण भारतीयों की इम्यूनिटी पावर दुनियां में सबसे ज्यादा होती है और इसी इम्यूनिटी पावर (रोग-प्रतिरोधक क्षमता) को कमजोर बनाने हेतु चाय, काफी, कोला, जंकफूड का पूरा षड्यंत्र चल रहा है; वैक्सीन, दवाएं, सैनेटाइजर सब भारतीयों की इम्यूनिटी पावर को कमजोर करने के ही औजार हैं। और हमारे डॉक्टर धन के लालच में आँखों पर गांधारी की तरह पट्टी बांधकर इन औजारों का मानवता पर अंधाधुन्ध उपयोग कर रहे हैं यहाँ तक कि नवजात शिशुओं को भी नहीं बक्श रहे।

कोई भी इन वायरसों से सुरक्षित नहीं है, कोई भी अपने आपको सुरक्षित समझने की भूल न करें:- क्योंकि ये वायरस और जिनकी नए-नए नामों से आगे आने की पूरी संभावना है, ये नेचुरल वायरस नहीं हैं, ये अरबों-खरबों रूपए खर्च करके बड़े घातक रूप से बड़ी व्यापारिक साजिश के तहत विश्व की बड़ी धनवान मेडिकल लॉबी द्वारा बायोलॉजीकल हथियार जैविक युद्ध के लिए तैयार कराये जा रहे हैं जिसमें माइक्रोसॉफ्ट का संस्थापक बिल गेट जैसा धनकुबेर भी शामिल है।

जिस दिन आपकी इम्यूनिटी पावर (रोग-प्रतिरोधक शक्ति) कमजोर हुई ठीक उसी दिन आपके इन

कोलइडल सिल्वर का हिन्दी में मतलब चांदी का पानी होता है।

वायरसों की चपेट में आने की पूरी-पूरी सम्भावना हो जाएगी, कमाल की बात है कि ये वायरस केवल मनुष्यों पर ही प्रभावी हमला करने में सक्षम हैं क्यों... आखिर क्यों? कारण स्पष्ट है मनुष्य की रोग-प्रतिरोधक शक्ति का कमज़ोर हो जाना, इस वायरस का पशु-पक्षी और समुद्री जीवों पर जरा भी असर क्यों नहीं हो रहा, वो इसलिए कि पशु-पक्षियों की इम्युनिटी पावर (रोग-प्रतिरोधक शक्ति) जन्म से लेकर मृत्यु तक कभी भी कम नहीं होती वे सदैव ही प्रकृति के अधीन रहते हुए रोग प्रतिरोधक शक्ति से लबालब भरे रहते हैं। ये तो मनुष्य ही है जो जंक फूड, चाय, काफी, कैम्पा-कोला गलत खानपान, बुद्धि की चातुर्यता, नकारात्मक सोच, अनेकानेक व्यसन और अंधाधुन्थ दवाओं के सेवन से अपनी रोग-प्रतिरोधक शक्ति को क्षीण करके अपना ही दुश्मन बनने में लगा है। रोग-प्रतिरोधक शक्ति का क्षीण, कमज़ोर होना ही अनेक रोगों और बुद्धिपेक्षा का कारण है, जीव जंतुओं में उनकी प्रबल रोग प्रतिरोधक शक्ति के कारण ही ना रोग पनपता है ना कभी भी बुद्धापा नजर आता है।

धन, दौलत, सम्पन्नता, ऐश्वर्य का महत्व तभी है, जब जीवन हो:- वो भी पूरी तरह स्वस्थ, रोग रहित। अब प्रश्न उठता है कि हम परिवार सहित पूरी तरह स्वस्थ, निरोग, और बलवान कैसे बनें और आगे भी बने रहें। ये प्रामाणिक रूप से सिद्ध हो गया है कि कोई दवा हमें निरोग और बलवान नहीं बना सकती, हमें अपने पूर्वजों की उस गौरवमयी धरोहर की ओर लौटना ही होगा, जिसे अपनाकर वे निरोग, स्वस्थ बलवान और दीर्घजीवी रहते थे। बैक्टीरिया वायरस तब भी थे परन्तु हमारे पूर्वज बलिष्ठ और रोग प्रतिरोधक शक्ति से सदैव परिपूर्ण होते थे, इसीलिए बैक्टीरिया, वायरस उनपर बेअसर होते थे। वे जाने अनजाने में या परम्परावश ऐसी जीवन शैली अपनाते थे जो बैक्टीरिया, वायरस, और रोगों को पनपने से पहले ही नष्ट कर देती थी, परन्तु आज हम अति आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता और तथाकथित मॉर्डन मेडिकल साइंस के वश में हो गये हैं, पहले हम मुगालों के गुलाम थे फिर फिरंगियों (अंग्रेजों) के हुए और आज हम पाश्चात्य सभ्यता डॉक्टर और दवाओं के गुलाम हैं; हर बात में कहने लगते हैं कि डॉक्टर ने ये कहा है, ये बताया है, आज हम भयभीत और डरे-डरे रहे हैं, इसिलिए मनुष्य जीवन की कमाई का बड़ा हिस्सा ये ही हड्डप रहे हैं। अभी का वक्त काफी भयवाह और डरावना है और मॉर्डन चिकित्सा विज्ञान में जो षड्यंत्रकारी प्रयोग और रिसर्च चल रही हैं उससे आगे आने वाला वक्त और ज्यादा पीड़िकारक, भयवाह और डरावना हो सकता है, अगर समय रहते अपनी रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बलवान नहीं बनाया तो सब कुछ लुटाकर भी खुद को और अपने परिजनों को बचा पाना लगभग असंभव हो जायेगा, मकान, दुकान, बगला, गाड़ी, व्यवसाय सब यहीं पड़े रह जायेंगे। बारिश शुरू होने से पहले ही छाता

कोलइडल सिल्वर का हिन्दी में मतलब चांदी का पानी होता है।

खरीदने में भलाई है अन्यथा भीगना निश्चित है। ये कोरोना वायरस तो एक परीक्षण मात्र है, पूरे विश्व की रोग-प्रतिरोधक शक्ति को टैस्ट करने का, भारत की जलवायु, पर्याप्त सूर्य प्रकाश और जड़ी-बूटियों के सेवन के कारण हम भारतीयों की रोग प्रतिरोधक क्षमता विश्व के अन्य देशों के लोगों के मुकाबले अभी तक काफी अच्छी है, लेकिन इसका मतलब ये कदापि नहीं है कि हम पूरी तरह सुरक्षित हैं पूरा विश्व और मेडिकल विज्ञान हमारी इसी सम्पदा (रोग-प्रतिरोधक शक्ति) को अनेकों प्रकार से नष्ट और कमज़ोर करने के प्रयासों में लगा है जिससे कि दवा माफिया दवायें बेचकर मोटा मुनाफा कमा सकें। और हम स्वयं आधुनिक होने का दिखावा करके उनके प्रयासों में सहयोग ही कर रहे हैं। सावधान रहें, कोरोना पर परीक्षण करके वे हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता की टैस्टिंग कर चुके हैं अगला जो भी वायरस, जब भी आएगा निःसंदेह हमारी रोग-प्रतिरोधक शक्ति के हिसाब से इससे भी ज्यादा कष्ट और पीड़ादायी होगा, क्योंकि विज्ञान और सनकी वैज्ञानिक चुप बैठने वाले नहीं हैं। इसलिए हम अभी से सतर्क होकर अपनी रोग-प्रतिरोध शक्ति को प्रबल और प्रचुर बनाने का उपाय करते रहना चाहिए। क्योंकि हमारी रोग प्रतिरोध शक्ति पूरी तरह प्रबल और प्रखर बनी रही तो बड़े से बड़ा वायरस कुछ भी अहित नहीं कर पायेगा, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार चट्टानों से टकराकर तूफान या तो शांत हो जाता है या अपनी दिशा बदल लेता है। जबकि कमज़ोर वृक्ष और मकान ध्वस्त और धराशायी हो जाते हैं। जड़ी बूटियाँ, आयुर्वेदिक काढ़ा आदि से इन्फेक्शन और फंगल ठीक होने में कुछ मदद, अवश्य मिल जाती है परन्तु वायरस को मारने में ये पूरी तरह कामयाब नहीं हैं।

अपने को बड़े से बड़े वायरस, बैक्टीरिया से सुरक्षित रखने हेतु हमेशा अपनी इम्युनिटी (रोग-प्रतिरोधक शक्ति) को बूस्ट (प्रबल) करते रहें:- सदियों से चांदी का प्रयोग नेचुरल एंटी-बायोटिक के रूप में वायरल, बैक्टीरिया और फंगल इन्फेक्शन को नष्ट करने में होता आया है, चांदी का पानी इनके लिए महाकाल है, पुराने समय में लगभग सभी घरों की रसोई में चांदी के बर्तनों का उपयोग थोड़ी बहुत मात्रा में अवश्य किया जाता था, जिससे चांदी का कुछ अंश धीरे-धीरे भोजन के द्वारा हमारे शरीर में नियमित जाता रहता था और मनुष्य की रोग-प्रतिरोधक शक्ति हमेशा ही प्रबल और प्रज्वलित रहती थी, परन्तु जबसे चांदी का इस्तेमाल इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंडस्ट्री में होने लगा है तभी से चांदी अत्यंत ही मूल्यवान होकर धीरे-धीरे भारतीय रसोई से गायब हो गयी जिस कारण हमारी रोग-प्रतिरोधक शक्ति कमज़ोर होने लगी और हम नित नए-नए रोगों के शिकार होकर डॉक्टरों के जाल में फँसते चले गए।

धनाण्य और साधन सम्पन्न लोगों में कोलाइडल सिल्वर काफी लोकप्रिय है कई देशी विदेशी

कोलाइडल सिल्वर का हिन्दी में मतलब चांदी का पानी होता है।

कम्पनी इसे बनाकर 25 ML से 100 ML की बोतल में 100/- से 720/- प्रति बोतल में बेच रही हैं। सम्पन्न वर्ग में जहाँ पैसे की कोई वैल्यू नहीं होती वे अपनी जवानी सुंदरता और रोग-प्रतिरोधक शक्ति कायम रखने के लिए इसे मिरेकल (चमत्कारी) ड्रिंक्स के रूप में हमेशा इस्तेमाल करते हैं।

बैंक और बाजार:- मान लीजिये किसी के बैंक खाते में पर्याप्त से भी कहीं ज्यादा धन जमा है तो ऐसे व्यक्ति पर कभी भी बाजार के उतार-चढ़ाव-महंगाई का रक्ती भर भी असर नहीं होगा, धन से परिपूर्ण ऐसा व्यक्ति जिसके बैंक खाते में पर्याप्त धन जमा है वो जब चाहे तब बैंक खाते से रुपये निकालकर बाजार से अपनी इच्छा की कोई भी वस्तु बड़ी आसानी से खरीद लेगा, इसके विपरीत जिसके खाते में पर्याप्त धन नहीं होगा वो कहां से धन निकलेगा, कहां से अपनी इच्छाएं पूरी करेगा?

ठीक बैंक और बाजार की ही तरह हमारा शरीर भी बैंक है और इसमें जमा रोग-प्रतिरोधक शक्ति हमारा संचित धन है और वायरस, बैक्टीरिया, फंगल खुला बाजार है यदि हमारे शरीर रुपी बैंक खाते में पर्याप्त और प्रचुर मात्रा में रोग प्रतिरोधक शक्ति रुपी धन जमा है तो हम मंहंगाई और अफरा-तफरी रुपी वायरस, बैक्टीरिया को निश्चित ही परास्त (खरीद) कर सकते हैं दुनिया में ऐसा कोई भी वायरस, बैक्टीरिया नहीं है न होगा जो रोग प्रतिरोध से परिपूर्ण मनुष्य का बाल भी बांका कर सके, बस अपने शरीर रुपी बैंक खाते में रोग-प्रतिरोधक शक्ति (इम्युनिटी) का बैलेंस पर्याप्त मात्रा में पूरी जागरूकता से बनाये रखना होगा, जरा सी चूक और लापरवाही बड़ी मुसीबतों का कारण बन सकती है। माना की मनुष्य से गलतियां हो जाती हैं परन्तु चांदी का पानी पीने वालों पर गलतियों का प्रभाव भी निष्प्रभावी हो जाता है।

वैज्ञानिक Dr. S Kumar (PHD Gold Medalist) का वैज्ञानिक विश्लेषण:-

सदियों पुराने अविष्कार के अनुसार चांदी के पानी से मात्र 6 मिनट से हो सकते हैं वायरस, बैक्टीरिया व फंगस समाप्त। अत्यंत उपयोगी पूरा वीडियो देने के लिए **Google** या **YouTube** पर टाइप करें **SCIENTIST RESEARCH FUNGUS Dr. S KUMAR** डा. एस कुमार स्वयं चांदी के पानी की एक **25 ML** की बोतल **720/-** में बेच रहे हैं।

अब हमें अपनी गलती सुधारनी ही होगी, पुनः चांदी का उपयोग करना ही होगा:-

(1) घर में जितने भी चांदी के पुराने बर्तन या जेवर आधा किलो से अधिक हों तो अच्छा उनको अच्छे से धोकर किसी पानी के बड़े बर्तन में डुबोकर रख दें, सभी परिवारीजन निरंतर इसी चांदी युक्त जल का सेवन करें, जब पानी कम हो जाये तब उसमें और स्वच्छ पानी मिलाते रहें यदि संभव हो तो साधन सम्पन्न लोग पुनः चांदी के बर्तनों में भोजन करने की पुरानी परम्परा को पुनः शुरू कर सकते हैं, कुछ ही महीनों के बाद आपके शरीर में प्रर्याप्त मात्रा में चांदी का प्रभाव हो जायेगा जिससे

कोलाइडल सिल्वर का हिन्दी में मतलब चांदी का पानी होता है।

आपकी रोग-प्रतिरोधक शक्ति में ज़बरदस्त बढ़ोत्तरी होगी और आप हर प्रकार के जानलेवा वायरल, बैक्टीरिया, और फंगल इन्फेक्शन से बचे रह सकते हैं, सुरक्षित रह सकते हैं; हालाँकि ये धीमी और सतत प्रक्रिया है इसका परिणाम कुछ माह में दिखाई देता है अतः मैं इसे प्रक्रिया न कहकर जीवनचर्या कहना ज्यादा उचित समझता हूँ, ये दवा नहीं है, लेकिन इसका असर दुनियां की किसी भी श्रेष्ठतम और मंहगी दवा से लाख गुना ज्यादा होता है।

(2) कोलाइडल सिल्वर मेकर, चांदी का पानी बनाने की मशीन:- “असर पहले ही घूँट से” यह 9 वॉट मामूली करंट की बिजली से चलने वाली विज्ञान और भारतीय परम्परा ही अनूठी मशीन है इसमें 5-6 इंच लम्बे 2 शुद्ध 99.999 ग्रेड की चांदी के तार लगाकर पानी भरे कांच के ग्लास में डुबोकर मशीन के स्विच को ऑन किया जाता है, 9 वॉट के अत्यंत मामूली करंट से 20 मिनट में 4 लोगों के उपयोग हेतु (एक खुराक 50 ML × 4 = 200 ML) शुद्ध चांदी का पानी तैयार हो जाता है।

बर्तनों वाली प्रक्रिया में जो काम महीनों में होता है:- वही काम इस मशीन द्वारा मामूली करंट से केवल कुछ ही मिनटों में हो जाता है। आप बर्तनों वाले चांदी के पानी का उपयोग करें या मशीन वाले चांदी के पानी का दोनों की प्रक्रिया में महत्व चांदी का ही है जिसका शरीर में जाना ही महत्वपूर्ण है, जीवन रक्षक है, हाँ मशीन निर्मित पानी बिना किसी झांझट के तुरन्त तैयार हो जाता है, और ज्यादा असरदायक भी होता है। महीनों तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। घर में काम करने वाली काम वालियों से चांदी के बर्तन और आभूषणों की सुरक्षा का खतरा नहीं रहता।

जबरदस्त इम्युनिटी बूस्टर कोलाइडल सिल्वर चांदी का पानी
सदियों से हर प्रकार के नए पुराने वायरस, बैक्टीरिया, जर्म्स कीटाणु, फंगल,
इन्फेक्शन का महाकाल “क्योर योर सेल्फ” पुस्तक से साभार...

कोलाइडल सिल्वर, चांदी के सूक्ष्म कणों के पानी में मिलने से बनता है। कोलाइडल धातु के ऐसे सूक्ष्म कण होते हैं, जो किसी द्रव्य पदार्थ (पानी वगैरह) में मिलाये जाने के बाद न तो उसमें घुलते हैं और न ही किसी आयनिक कंपाउंड का निर्माण करते हैं। चांदी के ये सूक्ष्म कण पानी में ढूँढ़ते नहीं बल्कि तैरते हैं आमतौर पर शुद्ध पानी में मौजूद आयनिक सिल्वर, सिल्वर कोलाइडल, आयनिक सिल्वर कंपाउंड या सिल्वर प्रोटीन को कोलाइडल सिल्वर (चांदी वाला पानी) कहा जाता है। यह पूरी तरह से शुद्ध चांदीयुक्त पानी होता है।

चांदी का औषधीय उपयोग:- प्राचीन काल से ही सिल्वर कंपाउंड का प्रयोग दवा के तौर पर होता रहा है 1880 में पहली बार सिल्वर नाइट्रेट के लिक्विड फॉर्म को नवजात बच्चों की आँखों को इन्फेक्शन से बचाने के लिए प्रयोग में लाया गया था। सौ से भी अधिक सालों से दुनियाभर के बर्न और ट्रोमा सेंटर्स में सिल्वर क्रीम्स को एण्टी- बायोटिक के तौर पर प्रयोग में लाया जाता रहा है।

कोलाइडल सिल्वर का हिन्दी में मतलब चांदी का पानी होता है।

आयुर्वेद और यूनानी दवाओं में भी इसका जमकर प्रयोग होता है। 5 PPM* (Particles Per Million) या उससे अधिक गाढ़ा कोलाइडल सिल्वर इन्फेक्शन फैलाने वाले वायरस बैक्टीरिया को मारने में बेहद असरदार है। सन् 1938 से पहले तक, एलोपैथी डॉक्टरों द्वारा कोलाइडल सिल्वर का बतौर एण्टी-बायोटिक काफी इस्तेमाल होता था। यह असरदार तो था पर जेब पर काफी भारी पड़ता था। नतीजतन 20वीं शताब्दी के चौथे-पांचवें दशक में सल्फा-ड्रग्स, पेनिसिलिन बगैरह को प्रयोग में लाया जाने लगा, जो सस्ती होने के साथ-साथ मरीज पर जल्दी असर करती थीं। बेशक वे हानिकारक प्रभाव भी उत्पन्न करती हैं।

कोलाइडल सिल्वर (चांदी वाला पानी) कैसे काम करता है ?

फंगी, वायरस, बैक्टीरिया और दूसरे सिंगल सेल (एक कोशिका वाले) पैथोजेन जब कोलाइडल सिल्वर के संपर्क में आते हैं तब यह उनकी ऑक्सीजन मेटाबॉलिज्म क्षमता को निष्क्रिय कर देता है। इसके कुछ ही मिनटों में पैथोजेन मर जाता है और शरीर के इम्यून सिस्टम, लिम्फ ग्रन्थियों व दूसरे वेस्ट रिमूवल अंगों द्वारा शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है।

कोलाइडल सिल्वर एक असरदार नेचुरल एण्टी-बायोटिक है जो हर तरह के इन्फेक्शन्स से हमें बचाता है। यह बैक्टीरिया, वायरस और फंगी के ऑक्सीजन मेटाबॉलिज्म के लिए जरूरी एंजाइम के निर्माण को रोक देता है, जिससे वायरस, बैक्टीरिया शरीर को किसी तरह का नुकसान पहुंचाये बगैर खुद-ब-खुद मर जाते हैं।

कोलाइडल सिल्वर (चांदी वाला पानी) आधुनिक एण्टी-बायोटिक से बेहतर कैसे है ?

आजकल इस्तेमाल में लाए जा रहे एण्टी-बायोटिक्स शरीर के लिए फायदेमंद एन्जाइम्स को भी नष्ट कर देते हैं। इसके बिलकुल विपरीत कोलाइडल सिल्वर का सिर्फ सिंगल सेल पैथोजेन्स के एन्जाइम्स को प्रभावित करता है। परंपरागत एण्टी बायोटिक्स में एक बड़ी खामी यह भी है कि इनके प्रयोग के बाद अक्सर सिंगल सेल बैक्टीरिया की संरचना और जीन्स में तब्दीली आ जाती है और इस्तेमाल की गयी एण्टी-बायोटिक को लेकर उनमें प्रतिरोधी क्षमता विकसित होने लगती है। कोलाइडल सिल्वर या सिल्वर के किसी अन्य रूप में इस्तेमाल से ऐसा नहीं होता और वायरस, बैक्टीरिया पूरी तरह से नष्ट हो जाता है। कोलाइडल सिल्वर की एक खूबी यह भी है कि यह अन्य दवाओं के साथ किसी तरह की प्रतिक्रिया नहीं करता। इसीलिए इसके सेवन के साथ अन्य जरूरी दवाओं का सेवन किया जा सकता है। कोलाइडल सिल्वर के प्रयोग से शरीर में किसी भी तरह के टॉक्सिन का निर्माण नहीं होता। यह पैथोजेन के ऑक्सीजन मेटाबॉलिज्म प्रक्रिया में सहायक एन्जाइम के अलावा और किसी से कोई रिएक्शन नहीं करता।

डोजेजः- शरीर से वायरल, बैक्टीरिया और किसी भी प्रकार के इन्फेक्शन को खत्म करने के

कोलाइडल सिल्वर का हिन्दी में मतलब चांदी का पानी होता है।

लिए, रोजाना 50 ML की मात्रा में चांदी के पानी के सेवन से शुरूआत करें। ऐसा चार दिन तक करने के बाद इसे छह सप्ताह तक रोजाना 20 मिली की मात्रा में लें। वजन के अनुसार (खासतौर पर बच्चों के मामले में) डोज को कम किया जा सकता है। इसके बाद कुछ दिनों के अंतर से यह प्रयोग दोबारा करें। उत्तम और निरोगी स्वास्थ्य के लिए बीच में कुछ ब्रेक देकर जीवन पर्याल इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। ये दुनियां का सर्वश्रेष्ठ औषधीय एवं जीवन-रक्षक टॉनिक है।

कोलाइडल सिल्वर के प्रयोग के तत्काल बाद शरीर के वेस्ट रिमूवल सिस्टम (लिवर, किडनी, स्किन, फेफड़े और पेट) पर दबाव बढ़ जाता है। शुरू में फ्लू जैसे लक्षण, जैसे कि सिर दर्द, थकान, चक्कर, मितली, मास-पेशियों में दर्द वगैरह नजर आ सकते हैं। इस दशा में अधिक से अधिक मात्रा में सादा पानी का सेवन करें। शक्कर व सैच्युरेटेड फैट्स का सेवन न करें। कुछ ही दिनों में शरीर की सेल्फ हीलिंग क्षमता में उल्लेखनीय सुधार नजर आयेगा और आपको अपनी सेहत में चमत्कारी बदलाव देखने को मिलेगा।

उपयोग:- चाँदी युक्त पानी को मुँह से या बतौर एनिमा प्रयोग में लाया जाता है। सेवन के कुछ समय के भीतर ही, यह अंतड़ियों द्वारा अब्जॉर्ब कर लिया जाता है। उसके बाद यह ब्लड के जरिये कोशिकाओं तक पहुँचता है। सेवन के पश्चात् टिश्यूज में सिल्वर की मात्रा इतनी हो जाती है कि वह कोशिकाओं की मरम्मत और शरीर को वायरस, बैक्टीरिया मुक्त करने का अपना काम शरू कर सके। किडनी और लिम्फ सिस्टम को टिश्यूज में जमा सिल्वर को शरीर से बहार निकलने में 2-3 सप्ताह से ज्यादा से ज्यादा का समय लगता है। ऐसे में शरीर पर अपना गुणकारी असर दिखाने के लिए भरपूर समय होता है।

चांदी युक्त पानी न सिर्फ इलाज बल्कि संक्रमण से होने वाली बीमारियों की रोकथाम में भी बेहद असरकारी है। इसके सेवन से बैक्टीरिया, वायरस, फंगी आदि का खात्मा होकर सर्दी, फ्लू आदि इन्फेक्शन्स व ऐसी कई दूसरी बीमारियों से भी आप बचे रहते हैं, जिनकी आपको जानकारी तक नहीं होती। आपने सुना ही होगा कि राजे-महाराजे और शेष-नवाब चिर युवा नजर आते थे। उसका एक कारण चांदी भी थी। वे हमेशा चांदी के बर्तनों में ही खाना खाते थे। इस तरह उनके शरीर को लगातार चांदी की सप्लाई होती रहती थी, जिससे उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता हमेशा प्रज्वलित रहती थी, कभी भी कम और कमजोर नहीं होती थी यही कारण था कि उनका शरीर बीमारियों की चपेट में आने से बचा रहता था। शरीर को बीमारियों से लड़ने के लिए एनर्जी नहीं खर्च करनी पड़ती थी और एनर्जी का प्रयोग शरीर को स्वस्थ बनाये रखने में होता था। भीड़-भाड़ भरे इस युग में हम कब और कौन-से वायरल इन्फेक्शन का शिकार हो जाएं, इसकी हमें जानकारी नहीं होती। ऐसे में चांदी के पानी का नियमित सेवन आपके लिए जीवन सुरक्षा कवच का काम करता है।

कोलाइडल सिल्वर का हिन्दी में मतलब चांदी का पानी होता है।

हर साल लोग दूषित पानी के चलते लो-ग्रेड ले लेकर गंभीर किस्म के नये-नये वायरल, इन्फेक्शन्स, बुखार... का शिकार होते रहते हैं। पांच लीटर पानी में महज 50 ML कोलाइडल सिल्वर (चांदी का पानी) मिला देने भर से पानी पूर्णतः शुद्ध हो जाता है।

साइन्स की समस्या हो या फिर गले की खराश हो या नाक बंद हो; या फिर शिशु की आँख में इन्फेक्शन हो - इन सभी मामलों में कोलाइडल सिल्वर का उपयोग पूरी तरह से सुरक्षित और फायदेमंद होता है। खाज-खुजली, एग्जिमा, जलने-कटने का घाव, फुँसी-फोड़े आदि त्वचा रोगों पर इसके बाहरी प्रयोग से शीघ्र लाभ होता है। तन की दुर्गम्थ का एक बड़ा कारण बैक्टीरिया हैं। सिल्वर वाटर को बतौर स्प्रे इस्तेमाल में लेकर इस समस्या से बचाव मुमकिन है। जलने के घाव पर सिल्वर वाटर का प्रयोग रामबाण की तरह असरकारी है। इसके इस्तेमाल से न सिर्फ घाव जल्दी भर जाता है बल्कि जलने का निशान भी कम हो जाता है। कोलाइडल सिल्वर के नियमित प्रयोग से भी आप कई गंभीर किस्म के वायरल इन्फेक्शन आदि से बचे रह सकते हैं, सही मायने में चिर युवा बने रह सकते हैं।

निष्कर्ष:- वायरस, बैक्टीरिया को पनपने, विकसित होने के लिए एक विशेष वातावरण की जरूरत होती है। उसके बगैर वह जीवित नहीं रह सकता। ,ऐसे में अगर उचित खान-पान के जरिये, यदि हम अपने शरीर के भीतर के अंगों को स्वस्थ बना दें तो उसमें वायरस, बैक्टीरिया, पैरासाइट्स का विकसित हो पाना नामुमकिन है। हमें चाहिए कि हम स्वस्थ आहार लें , जंक फूड को पूरी तरह से ना बोलें, खाना खाने से पहले हाथ धो लें। वाशरूम के प्रयोग के बाद, बच्चों का डायपर आदि बदलने पर हाथ धोना न भूलें। अपनी हाइजिन हैबिट्स में सुधार लाकर चांदी के पानी का उपयोग करके वायरस, बैक्टीरिया को पूरी तरह नष्ट किया जा सकता है, इसमें कोई दो राय नहीं।

कोलाइडल सिल्वर (चांदी के पानी) के लाभ

- रोग-प्रतिरोधक शक्ति (इम्युनिटी पावर) में जबरदस्त बढ़ोत्तरी
- सभी प्रकार के नये पुराने और भविष्य में आने वाले वायरस, बैक्टीरिया, फंगस, फ्लू और सर्दी-खाँसी से छुटकारा
- श्वसन प्रक्रिया में सुधार और साइन्स की प्रक्रिया की समस्या से राहत
- शरीर में जमा टॉक्सिन्स से निजात
- पॉजिटिव फीलिंग, सोच में स्पष्टता और गहरी नींद का आना

शंका-समाधान

1. क्या चांदी का पानी बनाने के लिए डिस्टिल्ड वाटर प्रयोग में ला सकता हूँ ?

कोलाइडल सिल्वर का हिन्दी में मतलब चांदी का पानी होता है।

आप डिस्ट्रिल्ड वाटर को इस्तेमाल में ला सकते हैं, परन्तु इससे कोई विशेष लाभ नहीं होगा नल का सादा पानी हो, प्यूरीफाइड वाटर हो या मिनरल वाटर या स्प्रिंग वाटर - कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाने के लिए सभी सामान रूप से उपयुक्त हैं।

2. क्या चांदी के पानी का उपयोग दवा के रूप में कर सकते हैं ?

जी नहीं, कदापि नहीं। चांदी पानी और चांदी भष्म आदि का उपयोग रोग-प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने हेतु हजारों वर्षों से होता आ रहा है, प्रबल रोग-प्रतिरोधक शक्ति रोग उत्पन्न ही नहीं हाने देती।

3. सिल्वर वाटर बनाने के लिए प्रयोग में लाये जाने वाले सिल्वर रॉड्स कितने समय तक चलते हैं ?

यह सिल्वर वाटर बनाने के तरीके पर निर्भर करता है। वैसे 5-6 इंच (2 ग्राम चांदी) के सिल्वर रॉड की एक जोड़ी से औसतन 5000 गिलास सिल्वर वाटर बनता है। लगभग 3 पैसे प्रति गिलास बाजार में मिलने वाले पानी से भी सस्ता।

4. क्या कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाते समय पानी में नमक भी मिलाया जा सकता है ?

कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाते समय पानी में कुछ भी न मिलाएं, नमक तो हरगिज नहीं। नमक मिलाने से कोलाइडल सिल्वर बनने की प्रक्रिया तेज जरूर हो जाती है, परन्तु पानी में काफी अशुद्धियाँ आ जाती हैं, जो कोलाइडल सिल्वर के प्रभाव को खत्म कर देती हैं।

5. कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाने का सही तरीका क्या है ?

कोलाइडल सिल्वर बनाते समय कोलाइडल सिल्वर मेकर को तब तक चालू रखें जब तक की पानी का रंग सफेद बादलों के रंग-सा, यानी क्लाउडी व्हाइट न हो जाये। ऐसा होने में लगभग 10 से 20 मिनट तक का समय लगता है।

6. एक समय में मुझे कितनी मात्रा में चांदी का पानी बना लेना चाहिए ?

इसकी कोई सीमा नहीं है। आप जितना चाहे उतनी मात्रा में चांदी का पानी बना सकते हैं। आम तौर पर लोग एक बार में महज एक गिलास सिल्वर वाटर बनाते हैं और 4 लोग सेवन करते हैं इस बात को ध्यान में रखें कि कोलाइडल सिल्वर को रंगीन कांच की बॉटल में रखना है। पारदर्शी बॉटल में रखने पर वह लाइट से रिएक्शन कर काला पड़ जाता है।

7. चांदी के बर्तनों में खाना खाएं या चांदी का पानी का सेवन करें इनमें बेहतर क्या है ?

चांदी के बर्तनों में खाना खाने से आपके स्वस्थ्य को लाभ होने में काफी लम्बा समय लग सकता है, जबकि कोलाइडल सिल्वर (चांदी वाला पानी) के सेवन से रिजिल्ट तुरंत मिलता है।

कोलाइडल सिल्वर का हिन्दी में मतलब चांदी का पानी होता है।

निर्माण व्यय:- सबसे पहले इस मशीन का निर्माण अमेरिका में हुआ था जहाँ से भारत में इसे मगाने पर खर्च लगभग **40,000/-** आता है, भारत में निर्मित अमेरिकन कंपनी की ही तरह उच्च क्वालिटी की मशीन **6,000/-** से **12,500/-** तक में उपलब्ध है, लेकिन ये केवल खास लोगों की मशीन है, आम लोगों में इसका प्रचलन न होने के कारण हर जगह उपलब्ध नहीं होती, इस मशीन के निर्माता प्रतिष्ठान के परिचित हैं हमारे विशेष अनुरोध पर मानवता की सेवा हेतु उन्होंने ये मशीन प्रतिष्ठान को मात्र **3,000/- + 12% GST (360/-)** कुल - **3,360/-** में प्रदान की हैं जिसे प्रतिष्ठान उसी कीमत **3,360/- + 300/-** पैकिंग, पोस्टेज खर्च सहित कुल **3,960/-** में प्रदान कर रहा है, इच्छुक बंधु **3,960/-** में मंगा सकते हैं, उपयोग विधि मशीन के साथ भेजी जायेगी।

ये पूरे परिवार की रक्षक जीवनभर काम में आने वाली मशीन है जिसके इस्तेमाल से आप स्वयं को, अपने पूरे परिवार को, सभी रिस्तेदारों को, पड़ोसियों को, पूरे मोहल्ले और पूरे गांव को सुरक्षा कवच प्रदान कर सकते हैं, कोई एक सज्जन या 2-3 मित्र / परिचित / रिश्तेदार मिलकर इसे मंगा लें, और “चांदी का पानी” पिलाकर (जैसे आजकल कुछ लोग काढ़ा बांट रहे हैं) सैकड़ों, हजारों लोगों की रोग-प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने में सहयोग करके मानवता की सेवा कर सकते हैं। मान लो किसी ने 100 लागों की रोग-प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने में सहयोग किया तो प्रति व्यक्ति मात्र - 40/- का खर्च हुआ, इससे सस्ता और क्या हो सकता है। बावजूद इसके मशीन पूरी तरह जीवनभर के लिए आपके ही पास सुरक्षित रहेगी। ये मशीन सुरक्षा स्वस्थ जीवन और परोपकार के लिए सर्वश्रेष्ठ इनवेस्टमेन्ट है।

आप अपनी और अपनों की रोग-प्रतिरोधक शक्ति को प्रबल बनाकर हर प्रकार के संक्रमण से मुक्त रहें स्वस्थ और निरोग रहें, प्रतिष्ठान परिवार की ऐसी ही कामना है।



श्री वैदिक प्रतिष्ठान®

158-161B, गौतमनगर, नई दिल्ली - 110049

Email: vedic1804@gmail.com

‘कॉल करें **7290053590, 01147385166 / 82**

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY